VOLUME - 2

ISSN 2349 638x
IMPACT FACTOR 7.367

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

Smt. Akkatai Ramgonda Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji

Tal-Hatkanangale, Dist- Kolhapur, Maharashtra- 416115
Affiliated to Shivaji University, Kolhapur
Reaccredited by NAAC with 'B+ Grade (2.57 CGPA)

ONE DAY NATIONAL MULTILINGUAL SEMINAR

on

'Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature'

Saturday, 30th September, 2023

ORGANISED BY

Departments of Marathi, Hindi, English and IQAC

Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

Executive Editor

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

Editors

Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)
Mr. Sudhakar Indi (Hindi)
Mr. Dipak Sarnobat (English)
Minaj Naikawadi

Scanned with OKEN Scanner

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal

ISSN 2349-638x

Impact Factor 7.367

Website :- www.aiirjournal.com

Theme of Special Issue

Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature

(Special Issue No.128)

Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

Executive Editor

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

Editors

Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)

Mr. Sudhakar Indi (Hindi)

Mr. Dipak Sarnobat (English)

Minaj Naikawadi

Scanned with OKEN Scanner

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
39	Karishma Amir Jamadar	Literature , Culture and Gender	119
		Hindi Language Papers	
40	डॉ. शोभा माणिक पवार	21 वी सदी की कहानी साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ	123
41	डॉ.विट्ठल शंकर नाईक	इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानियों में लोक संस्कृति	126
42	डॉ. संगीता ठाकुर	21 वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित मानव जीवन	133
43	डॉ. कल्पना पाटोळे	इककीसवी सदी के हिंदी उपन्यासों मे सामाजिक एंव सांस्कृतिक परिदृश्य	137
44	डॉ. सुनीता रावसाहेब हुन्नरगी	मनमोहन सहगल के उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक परिदृश्य	140
45	डॉ. अशोक मोहन मरळे	21 वीं सदी के हिंदी काव्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य	145
46	श्री. मलगोंडा पाटील	इक्कीसवी सदी के हिंदी काव्य में सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य	149
47	प्रा. मारूफ समशेर मुजावर	इक्कीसवी सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित किन्नर विमर्श	153
48	प्रा. डॉ. रगडे परसराम रामजी	इक्कीसवीं सदी की आम्बेड़करवादी हिंदी कविताओं में सामाजिक परिद्रश्य	157
49	डॉ.रमेश शिवाजी बोवडे	इक्कीसवीं सदी के हिंदी नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य. (सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के नाटको के संदर्भ में)	161
50	डॉ. अमोल तुकाराम पाटील	21 वीं सदी के उपन्यासों में परिवर्तित सामाजिक मूल्य	164
51	डॉ. माला कुमारी गुप्ता	कलि-कथा : वाया बाइपास : सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य	166
52	डॉ.सरोज पाटील	निर्मला पुतुल लिखित 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश	170
53	डॉ.प्रकाश आठवले	'संघर्ष' में चित्रित सामाजिक संघर्ष	174
54	प्रो. (डॉ.) विजय महादेव गाडे	वेश्या विमर्श की पहल – कोठा नं. 64	178
55	प्रा.सारिका राजाराम कांबळे	'ग्लोबल गांव के देवता' : सांस्कृतिक परिदृश्य	185

Scanned with OKEN Scanner

इक्कीसवी सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित किन्नर विमर्श

प्रा. मारूफ समशेर मुजावर
सहयोगी प्राध्यापक,
चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी

यह सर्वविदित है कि समाज निरंतर शिक्षा, तकनीकी, चिकित्सा पध्दति, साहित्य और सिनेमा जगत् में बहुत तरक्की प्राप्त कर रहा हैं। किंतु कुछ समुदाय सामाजिक स्तर पर कहीं ना कहीं अपने मानवाधिकारों के लिए जद्दोजहद, मेहनत कर रहैं। सामाजिक धरातल पर अपनी पहचान और जीवनयापन करने के लिए जगह ढूंढते दिखाई दे रहे हैं। आधुनिक समय में कुछ वर्ग इतने पिछडे हुए दिखाई देते हैं ओंर वास्तव में उन्हें सामान्य लोगों की भांति सुख–सुविधापूर्वक मानवीयता का दर्जा पाने के लिए कई वर्ष बीत जाएंगे।

ऐसे ही २१ वीं सदी में समाज की मुख्यधारा से बहुत दूर बसा तृतीयलिंगी समुदाय संवैधानिक दृष्टिकोन से सरकारी कागजों में अपनी जगह बनाने में सफलता हासिल कर चुका है। परंतु सामाजिक स्तर पर इस समुदाय के प्रति हिचकिचाहट अभी भी बनी हुई है। समाज उनके रहन–सहन, चाल–चलन और बाहरी आवरण को देखकर असहजता महसूस कर रहा है। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं, यदि उन्हें अपने समाज में मान–समान के साथ मिल–जुलकर साथ जुडने का मौका दिया जाए तो तृतीयपंथी समुदाय भी सभ्य इंसानों की तरह ही अपने व्यवहार में बदलाव लाने की कोशिश अवश्य करेंगे। समुदाय के व्यवहार में बदलाव लाने के लिए उन्हें पारिवार और समाज को ही शिक्षा से जोडकर संस्कार देने होंगे। इसी संदर्भ में २१ वीं सदी के उपन्यासों में किन्नर जीवन के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए लेखन का आरंभ किया गया।

किसी भी देश के समाज, समुदाय को आर्थिक रूप से सुदृढ बनाने के लिए सुव्यवस्थित शिक्षा, तकनीकी और प्राकृतिक संसाधनों का होना जरूरी हैं। अगर किन्नर समुदाय की आर्थिक व्यवस्था देखेगें तो उनके पास बधाई मॉगने और दे व्यापार करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है. संवैधानिक स्तर पर २०१४ से किन्नरों को पिता संपति लेने का पूरा अधिकार है लेकिन भारत में सिर्फ टक्के ट्रांसजेंडर अपने माता–पिता के साथ रहते हैं। लगभग अधिकांश ट्रांसजेंडर बच्चों की वास्तविक पहचान छुपाकर मॉ–बाप उन बच्चों को साथ में रखना चाहते हैं परन्तू चाद दिवारी के भीतर लैंगिकता छुपाए रखना संभव भी नहीं हैं। लैंगिक पहचान को छुपाए रखने के कारण मानसिक दबाव और तनाव के कारण अधिकांश बच्चे घर छोडकर भाग जाते हैं। घर से भागने के बाद कुछ किन्नरों को अच्छे गुरू की शरण मिल जाती हैं लेकिन अधिकांश किन्नरों के साथ किन्नर डेरों में भी शोषण होता हैं।

संवैधनिक रूप से इनको अपने अधिकार मिले लगभग आठ साल पूरे होने जा रहे हैं और उसके बावजूद भी सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर कोई नहीं आया है। ' ट्रांसजेंडर्स ' पर अध्ययन के अनुसार मानवाधिकार आयोग ने बताया है कि ट्रांसजेंडर्स को बडे पैमाने पर मानवीय अधिकारों के साथ समझौता करना पडता है। घर, समुदाय और शिक्षण संस्थानां में इनके साथ खुलकर भेदभाव किया जात है। अगर न्याय की बात करें तो पुलिस और प्रशासन से अधिकांश किन्नर डरते हैं, क्योंकि पुलिस स्वयं इनको परेशान करती है। किन्नर आज भी मूलभूत सुविधाओं जैसे–रोटी–कपडा–मकान और सम्मान से वंचित हैं। ऐसी कोई योजनाएँ इनके लिए नहीं

Scanned with OKEN Scanner

बनाई गई हैं जो इन्हे रोजगार, शिक्षा और आवास जैसी सुविधाएँ मुहैया करवा सके। भारत में किन्नरों को विवाह करने, पति या पत्नी रखने और अपना परिवार स्थापित करने के लिए कोई कानूनी समर्थन नहीं मिला है। उन्हें अक्सर आवास हेतु किराये पर होटल और मकान के लिए कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता।

कई बार हिंदी और अंग्रजी अखबारों में समाचार पढने को मिलते है, वे आज भी भारत में 'परलिंगी' सुमदाय के लोग विशेष कानूनी मान्यता प्राप्त 'लिंगीय पहचान' के संदर्भ में समस्याओं का सामना करते हैं। खासकर राशनकार्ड, पासपोर्ट, आधारकार्ड, बैंकअंकाऊट, ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने तथा आम जनसुविधाओं में जैसे टॉयलेट, बस ट्रेन, स्कूल–कॉलेज, सैलून, होटल, दर्शनीय स्थल इत्यादि छोटी–मोठी सुविधाओं से भी वंचित हो रहे है बेझिझक होकर उन सब सुविधाओं का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे।

यहाँ ट्रांसजेंडरों को लाभकारी रोजगार को सुनिश्चित करने के लिए कुछ जगहों पर प्रयास किए गए। जैसा कि २०१७ में केरल में कोच्चि मेट्रो रेल लिमिटेड ने २३ ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को रोजगार दिया गया। जबकि वहाँ उनमें से आठ व्यक्तियों ने एक महीने के अंतर्गत नौकरी छोड दी। क्योंकि कई मकान मालिकों ने उन्हें रहने के लिए आवास उपलब्ध नहीं करवाये। जिन्होंने रहने के लिए जगह दी तो किराये की मनमानी राशि तय की।

शुलभ शैचालय की अनुपलब्धता की समस्या किन्नर बडे पैमाने में कर रहे हैं। इस प्रकार की असुविधा के कारण वे महिला और पुरूष दोनों से भेदभाव और उपेक्षा के शिकार होते हैं। इनके लिए सार्वजनिक बस स्टैण्ड, रेलवे, हवाई अड्डे तथा कम्पनियों में न्यूट्रल बाथरूम और टॉयलेट की व्यवस्था की जानी चाहिए। हालांकि २०१७ में केंद्र सरकार ने पुरूषों ओर महिलाओं दोनों के लिए बने टॉयलेट का इस्तेमाल करने की अनुमति देकर किन्नरों की समस्या का निदान करने का प्रयास किया है। कुछ कॉपरेट कम्पनियों में प्ठडण प्दजमसए ज्ंजं ैजममसए प्दविलेए ळवसकउंद ैबीए ब्नउउपदे इत्यादी कंपनियों ने यूनिवर्सल–एक्सेस टॉयलेट की स्थापना की है।

किन्नर समुदाय की आमदनी का मुख्य स्त्रोत बधाई मॉगना है। यदि देखा जाए बधाई से प्राप्त आमदनी से अधिक उनके दैनिकी खर्चे हैं। २१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु उभर कर आए हैं, इनत माम मुद्दों पर समाज और सरकार को विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। जैसा हि –

१. सार्वजनिक यातायात में हास्यात्मक और भेदभाव का सामना करना पडता है इसलिए कई बार निजी वाहन या किराये लेकर जाते है, इन्हें भारी राशि चुकानी पडती है।
२. सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में भी इनके साथ सामान्य व्यवहार नहीं किया जाता इसलिए कुछ किन्नर शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें बहुत अधिक फीस अदा करनी पडती हैं।
३. छोटी–मोटी बिमारी होने पर भी सरकारी डॉक्टर इनका इलाज करना नहीं चाहते इसलिए प्राइवेट अस्पतालों में इलाज करवाने के मनचाहे पैसे लूटते हैं।
४. सामान्य रेस्टारेंट, मॉल और पब्लिक यातायात इत्यादि संस्थानों में सुविधा नहीं होने के कारण किन्नरों को अपनी क्षमता से अधिक पैसे व्यय करने पडते है.।
५. इस प्रकार उपन्यासों में किन्नरों के रोजगार, शिक्षण संस्थान, शारीरिक परामर्श और अस्पतालों की सुविधाओं की कमी देखने को मिल रही है। इनत माम बिंदुओं का प्रभाव किन्नरों की आर्थिक स्थिति पर भी पडता है।

Scanned with OKEN Scanner

६. उपन्यासों के कथानायकों में नाजबीबी, हर्षा, विनीत, छैलू, सिमरन, बिन्नी, पूनम, प्रीत, ताग इत्यादि पात्र आर्थिक कमजोरी को महसूस कर रहे है

२१ वी सदी के हिंदी उपन्यासों में किन्नरों की आर्थिक स्थिति और उनकी आमदनी स्त्रोत देखा जाए तो नीरजा माधव ने २००२ में यमदीप उपन्यास लिखकर साहित्य को किन्नर जीवन से जोडने का काम किया है। 'यमदीप' उपन्यास पात्र हिजडा परम्परा के अनुसार 'बधाई' से ही अपनी जीविकोपार्जन करते दिखाई देते हैं। दिनभर की कमाई का कुछ हिस्सा अपने गुरू को भी देते हैं क्योंकि गुरू ने ही कमाई का जरिया सिखाया और जजमानों के घर शिष्यों को सौंपे हैं। परंतु बधाई के पैसों जरूरतें पूरी भी नहीं हो रही है इसलिए कुछ किन्नर चोरी–छुपे सेक्सवर्क करने लग जाते हैं ताकि अपनी कमाई का गुरू को हिस्सा देने के बाद कुछ उनके पास बचें। नाजबीबी के द्वारा सोना को डेरे में ले आने से खर्चा और बढ जाता है, इसलिए महताब गुरू उस दिन नाजबीबी से अपना हिस्सा नहीं लेते हुए अन्य शिष्यों से लेती है तब चमेली इस तरह के व्यवहार पर प्रश्न करती है, जब महताब गुरू ने उसे समझाया तो नाजबीबी से अपनी चिंता व्यक्त करती है कि – ''सोचते तो हम भी हैं, नाज। पर तन तो भगवान ने आधा टुकडा बनाया कि किसी लायक नहीं रहे और पेट... ? पेट तो नहीं न बंद करके भेजा। वह तो खुला ही है। रोज भरो, रोज खाली। उसे भी काटकर या सीकर भेजता तो कम से कम बस जीना ही तो रहता।'' आलोच्य उपन्यास में चमेली की चिंता से समस्त हिजडा समुदाय की वास्तविक स्थिति समझ सकते हैं। समाज और परिवार तो इनसे भेदभाव करके हाशिये पर फेंक देंगे लेकिन पेट की भूख शांत करने के लिए किसी तरह पैसा इन्हें कमाना ही पडेगा। दूसरे संदर्भ में चमेली रोजी–रोटी के लिए चिंता व्यक्त कर रही है कि ''अरे, अब जजमान के यहाँ भी क्या आशा? सरकार ने उनका भी बधिया करवा दिया है। दो से ज्यादा पैदा नहीं करते। अर्थात् किन्नर समुदाय की आर्थिक स्थिति अधिक कमजोर होने के निम्न कारण प्रमुख माने जा रहे हैं. – १. महानगरों में अपार्टमेंटस् सिस्टम को बढावा. २. गांवों से शहरों की ओर पलायन. ३. परिवार नियोजन ४. आधुनिक लोगों का आशीर्वाद लेने और नेग देने जैसी धारणाओं के प्रति मोह भंग होना इत्यादि लेकिन किन्नरों का रोजी–रोटी के लिए 'बधाई' एकमात्र माध्यम समझाकर जनसंख्या बढाने के प्रति लालच भी अज्ञानता और अशिक्षा है। इनको रोजगार के लिए समाज और सरकार को उन्हें शिक्षा, वाणिज्य–व्यापार से जोडने की आवश्यकता है। खैर उपन्यास का लेखन काल २००२ के समय का था आज स्थितियाँ काफी बदल रही है। यह बदलाव आगे के उपन्यासों में कॉफी सकारात्मक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है।

'मैं भी औरत हूँ' (२००५) में अनुसूया त्यागी कृत उपन्यास में सशक्त माता–पिता लैंगिक अस्पष्टता वाली संतान की सर्जरी करवाकर स्वस्थ जीवन जीने की आजादी ही नहीं देते बल्कि रोशनी को सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक दृष्टिकोण से भी सक्षम बनाने का सहयोग करते हैं। पढ–लिखकर एक कम्पनी की सी.ई.ओ. बनकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन जाती हैं। समय के बदलते दौर में काफी क्षेत्रों में ट्रांसजेंडर को काम करने का अवसर दिया जाने लगा। – ''१० व्वउचंदपमे जीम भ्पतमक ज्तंदेहमदकमते पद प्दकपं ब्बमदजनतमए सजतंद प्दकपं च्अज स्जमकए न्जींए म्लए थ्जनतम ळतवनचए थ्जनतम ळतवनचए ज्ञवबीप डमजतवए क्मसीप डमजतवए "च प्दमतें च्अजए जीपतक म्लम बंन्रिए ळ्मदमज थ्वनदकपजपवद मजबएरू यानि बहुत ही बडा बदलाव उपन्यास में ही नहीं बल्कि सामाजिक क्षेत्र और देश की संस्थाओ में भी आर रहा है।

२०११ में प्रदीप सौरभ ने 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नर, गे, लेस्बियन, लौंडेबाज, समलैंगिकता पर आधारित उपन्यास में पात्रों के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछडे

Scanned with OKEN Scanner

लोगों का संघर्षपूर्ण जीवन का यथार्थ अंकन किया है। लेखक खोजी पत्रकार होने के कारण किन्नर समाज के विभिन्न पहलुओं को बहुत नजदीकी से पडताल करते हुए उनकी अच्छाई और बुराई के दोनों पक्षों का बखूबी से चित्रण किया है। समाज में गरीब लोगों का शोषण किस तरह होता है और दो वक्त की रोटी के लिए उन्हें क्या नहीं करना पडता? समाज के कई लोग ऐसे हैं जिन्हें मजबूरन हिजडा बनना पडता है। लेखक इसका उदाहरण 'तीसरी ताली' उपन्यास में पात्र के माध्यम से देते है कि ''माना मैं मर्द हूँ, लेकिन समाज मुझसे मर्द का काम लेने के लिए राजी नहीं है। मुझे इस समाज ने मादा की तरह भोग की चीज में तब्दील कर दिया है। मैं मर्द रहूँ, औरत रहूँ या फिर हिजडा बन जाऊँ, इससे किसी को कोई फर्क नहीं पडेगा, पेट की आग तो बडे–बडों को न जाने क्या–क्या बना देती है।' ज्योति एक दलित लडका है उसके अंदर की नृत्यकला के कारण स्त्री–भाव जागृत होणे कारण बाबू साहब जैसे लोग उनका शोषण करते हैं और इस शोषण से परेशान होकर एक दिन हिजडा बनने की ठान लेता है।

'तीसरी ताली' उपन्यास में कमाई के अलग–अलग माध्यम है। किसी के साथ जोर–जबरदस्ती किए बना इज्जत के साथ 'बधाई' मॉगकर जीविकोपार्जन करते हैं। लेकिन कुद किन्नर ऐसे भी हैं यदि उनकी इच्छानुसार जजमान उन्हें 'नेग राशि– नहीं दे तो वे नंगा नाच शुरू कर देते हैं और इस तरह की कमाई करने वालों के पास धन–दौलत की कोई कमी नहीं रहती। कला मौसी जैसी कई बुजुर्ग किन्नरों की हालत खराब को मिलती है, क्योंकि उनकी मण्डली के अन्य हिजडे दूसरी मंडली में शामिल हो गये और मण्डली के आपसी विवादों और झगडो में उनकी कमाई के सारे पैसे चले गये। लेकिन डिम्पल के पास खूब पैसे सोना–चांदी है क्योंकि वह खास अवसरों पर जजमानों के सामने ताल ठोककर बधाई की ऊँची मॉग रखती हैं, लोग उसकी बेइज्जती से बचने के लिए उनकी मॉग के अनुसार नेग दे भी देते हैं।

उपसंहार –

रचनाकारों ने किन्नर जीवन के सामाजिक पक्ष से संबंधित सभी आयामों का सफलतापूर्ण चित्रण किया है। इससे यह स्थापित है कि यदि समाज तृतीय प्रकृति के लोगों का सकारात्मक ढंग से सहयोग करे तो किन्नर भी साधारण जन–जीवन में मिल–जुलकर रहना ही नहीं यद्यपि वे राष्ट्र की उन्नति में भाग लेने हेतु शत–प्रतिशत तैयार है। इसी कम में रचनाकारों ने किन्नरों की आर्थिक स्थिति से संबंधित दोनों पक्षों का यथार्थपरक चित्रण किया है, यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं हैं।

संदर्भ सूची–

१. 'यमदीप' – नीरजा माधव
२. 'तीसरी ताली' – प्रदीप सौरभ
३. वाङ्मय त्रैमासिक – संपादक.डॉ.एम.फीरोज अहमद
४. https:www.zerokaata.com

Scanned with OKEN Scanner